कला साहित्य संस्कृति और सामाजिक सरोकार की
मासिक पत्रिका

आरोह अवरोह

Aaroh Avaroh
मई, 2009

Rs.12/-

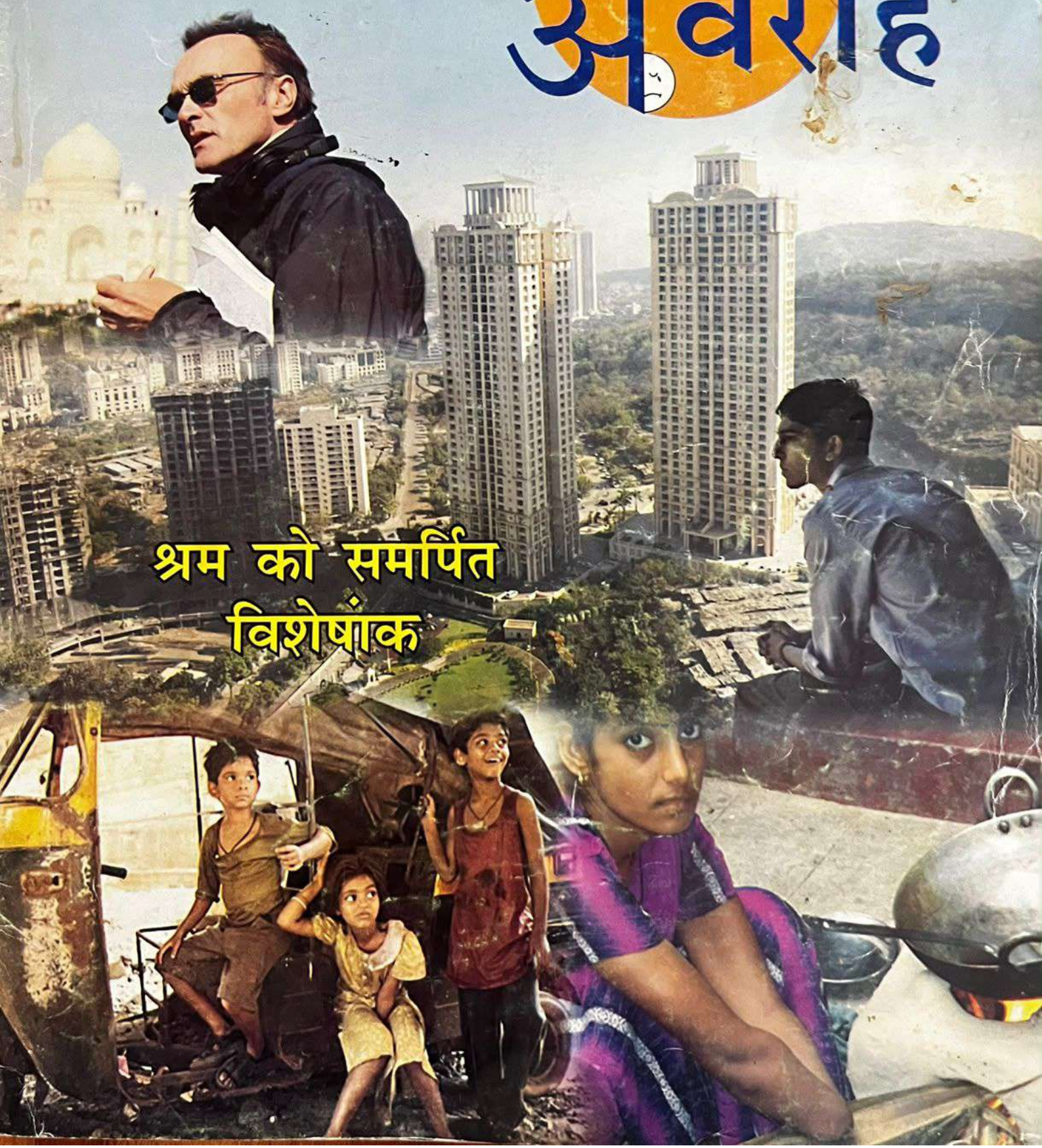

श्रम को समर्पित विशेषांक

कला का कोना

ऐतिहासिक है कला महाविद्यालय

...सांस्कृतिक रिपोर्टर

पटना संग्रहालय के पीछे विद्यापति मार्ग पर अवस्थित कला महाविद्यालय अपनी संरचना के कारण आँखों को भाता है। कुछ वर्षों तक इसके पास बाउँड्री नहीं थी। गदहे, गाय, बैल और कपड़ा धोने वालों के लिए यह स्वर्गयेधान था। रात्रि बेला में अनैतिक कार्य से लेकर चोरी-चमारी तक की छूट थी यहाँ। फिर इसे बाउंड्री मिली। इससे सटे छात्रावास में रौनक़ लौट आयी। लेकिन एडहॉक बेसिस पर शिक्षकों से पढ़ाई का कार्य लेने वाला यह महाविद्यालय इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए तड़पता रहा है। वर्तमान प्राचार्य प्रो० डॉ० अनुनय चौबे ने जो जानकारी दी है उससे काफी संतोष हुआ है। सन् 1939 में इस महाविद्यालय की स्थापना विद्यालय के रूप में गोविंद मित्रा रोड में हुई। प्रयास था कला के अभूतपूर्व शिल्पी राधा मोहन बाबू का। फिर इसे बंदर-बगीचा में लाया गया वहाँ से इस महाविद्यालय ने ह्वाइट हाउस (बिहार टेक्स्ट बुक कमिटि) की यात्रा तय की। अन्ततः 1954 में यह महाविद्यालय विद्यालय के रूप में वहाँ स्थापित हुआ जहाँ आज हम इसे देख रहे हैं। यानी विद्यापति मार्ग पर। कला शिल्पी बाबू उपेन्द्र महारथी ने इस महाविद्यालय का डिजायन तैयार किया जो वास्तुकला का अद्‌भुत नमूना है। 1974 में इसे विद्यालय से महाविद्यालय में परिणत किया गया और 1977 में पटना विश्वविद्यालय को हस्तांतरित किया गया। तबसे आजतक इसकी यात्रा ऊबड़-खाबड़ पगडंडियों पर निरंतर जारी है। चूँकि प्रारंभ में यह विद्यालय था, इसलिए व्याख्याताओं के पद सृजित नहीं हुए थे। अब यू.जी.सी. के मापदंड पर इस महाविद्यालय में व्याख्याताओं के पद सृजित हो गये हैं। यह सूचना कला-प्रेमियों को अच्छी लगेगी। एक और ख़बर सुखद है। राष्ट्रीय संग्रहालय ने इस महाविद्यालय की धरोहर की देखरेख की जिम्मेदारी संभाल ली है। सैकड़ों नायाब मूर्तियाँ, पेटिंग इत्यादि की। अब सुरक्षा राष्ट्रीय संग्रहालय के हाथों में है। प्रो. अनुनय चौबे का यह प्रयास सराहनीय है। अभी इस महाविद्यालय में विभिन्न विषयों में लगभग तीन सौ विद्यार्थी प्रशिक्षण पा रहे हैं। इस महाविद्यालय की गौरवशाली परंपरा अब और अधिक गौरवशाली होगी।

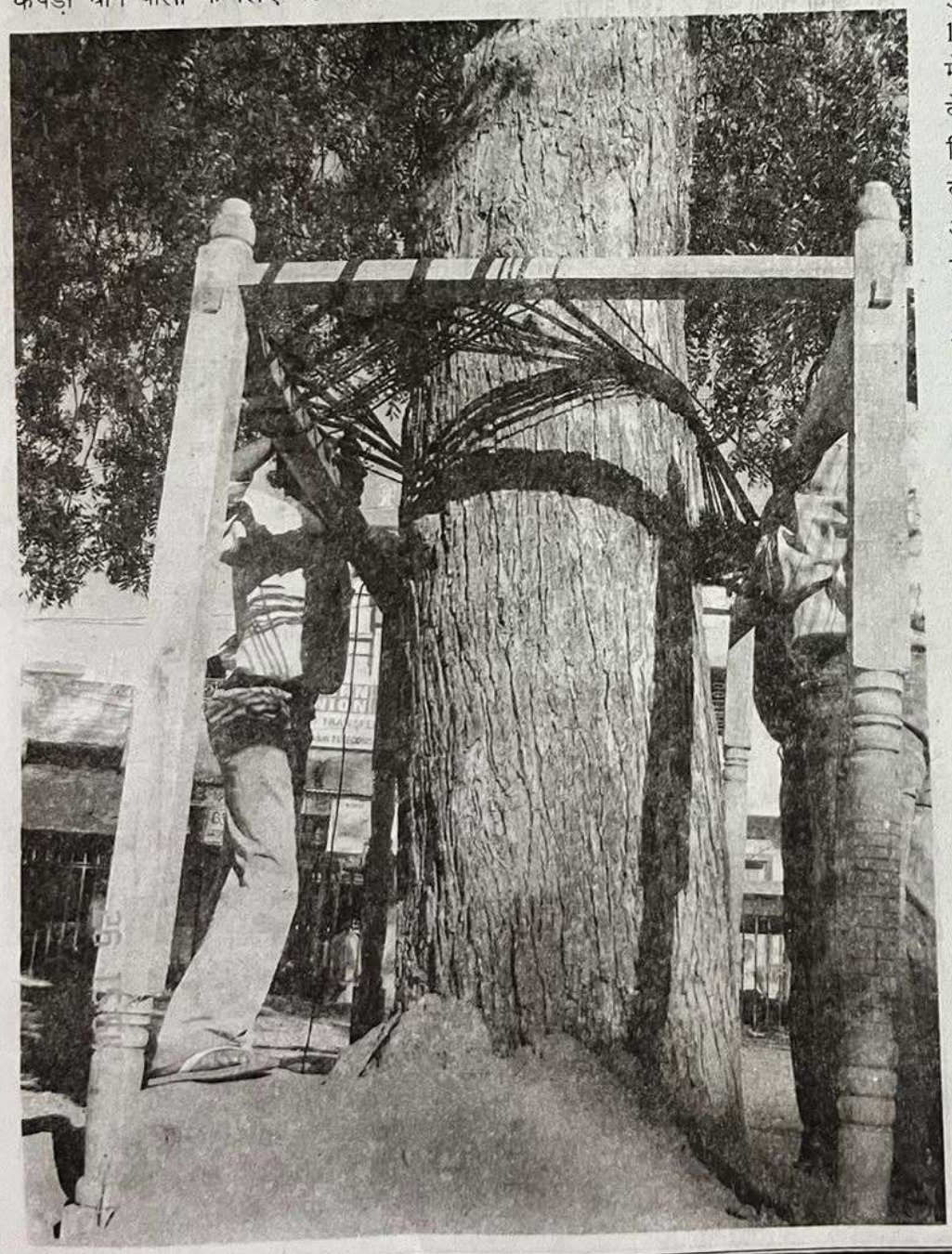

अपने कलाकार को पहचानिए

अमरेश कुमार बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। दस सितम्बर 1971 को भोजपुर के पास जगदीशपुर से सटे एक गाँव में आपका जन्म

हुआ। 1993 में कॉलेज ऑफ आर्टस क्राफ्ट्स, पटना से आपने बी.एफ.ए. किया। 1995 में बी.एच.यू. वाराणसी से मूर्ति-कला में फैक्लटी ऑफ विजुअल आर्ट्स से एम.एफ.ए. किया। 1999 में यू.जी.सी से नेट और वर्तमान में कॉलेज ऑफ आर्ट्स-क्राफ्ट पटना में प्राध्यापक हैं। आपको कई स्कॉलरशिप प्राप्त हुए और आपने ग्रुप शो में 1989, 1990, 1991, 2001, 2002, 2006 और 2007 में अपनी कलाकृतियों के साथ हिस्सा लिया। आपने कई महत्त्वपूर्ण कैम्पस में भागीदारी की। 1990 में ग्राफिक्स कैम्प, पटना, 1993 में आर्टिस्ट कैम्प वाई रिदम, पटना, 2009 में संदर्भ और स्कलप्चर कैम्प, उदयपुर चर्चित रहे। भागीदारी के लिए ललित कला-अकादमी, राष्ट्रीय ललित कला अकादमी, एन.सी.जे. सी.सी. और ई. जेड, सी.सी. जैसी संस्थाएँ सामने रहीं। 'टेराकोट' में भी आपको दक्षता हासिल है। आपके कलेक्शन को नेशनल गैलरी ऑफ मॉडर्न आर्ट, नयी दिल्ली, ललित कला अकादमी, नयी दिल्ली, स्टेट ललित कला अकादमी, उ०प्र० इत्यादि संस्थानों में देखा जा सकता है।

आपको कई सम्मान प्राप्त हुए हैं। सांस्कृतिक संघ, खगौल, पटना, बेगुसराय द्वारा (कवि दिनकर प्रतिमा स्थापना समिति) श्री धरगी आर्ट गैलरी, नयी दिल्ली द्वारा और जहाँगीर आर्ट गैलरी, मुंबई द्वारा। ये सभी सम्मान आपकी कला कृतियों के लिए दिये गये।

आप बिहार और खासतौर से भोजपुर की मिट्टी की सुगंध हैं और देश का नाम उज्ज्वल कर रहे हैं, इसके लिए 'आरोह-अवरोह' की ओर से आपको बधाई और आपका स्वागत।

अमरेश कुमार का रचना-संसार विविधताओं से भरा हुआ है। आर्ट की विभिन्न शैलियों को इन्होंने अपनी कला-सृजन के लिए चुना है। पत्थर, मिट्टी, ब्राँज, मेट्ल इत्यादि। प्रकृति के साथ जीवन को जोड़ते हुए इन्होंने कुछ नवीन प्रयोग किये हैं। खासतौर से पेड़ के पास बिछी हुई चारपाई में इन्होंने अपनी कला की सुगंध को बिखेरा है। पेड़ से ऑक्सिजन मिलती है इसलिए पेड़ के पास रखी हुई चारपाई जीवन को ऑक्सिजन से भर देती है। टेराकोटा का काम भी नायाब है लेकिन पत्थरों के साथ कलाकार का रिश्ता कुछ अधिक है। सृजन के मूल में साहित्य, कल्पना, जिज्ञासा, विज्ञान, संगीत और आध्यात्म की भूमिका रहती है। इन्होंने अपनी सृजन-प्रक्रिया को इन सारी चीज़ों से जोड़ा है। बिहार की मिट्टी में ऐसे कलाकारों की अनोखी कला सराहने लायक है। कुछ कलाकृतियों की छवियाँ यहाँ दी जा रही हैं। ❑

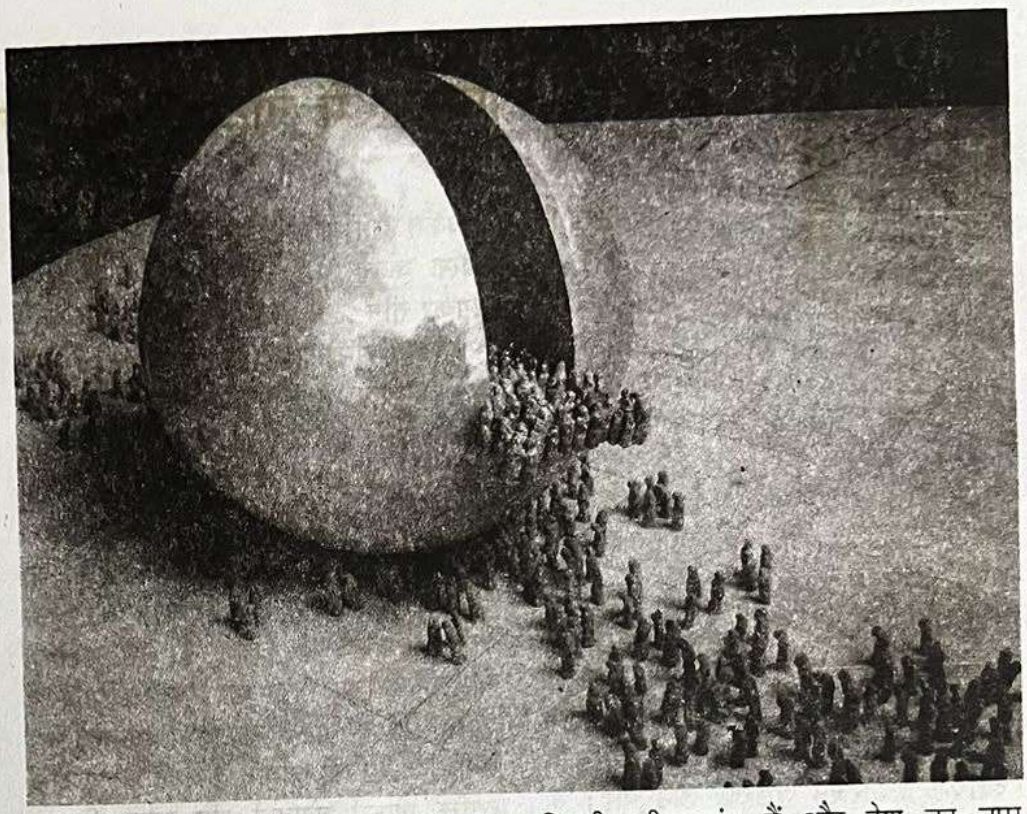

AATM MANTHAN

Aluminium Bronze, Terra Cotta; 36 x 36in 2007